Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 05, (अक्टूबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 08–11

जैविक बनाम प्राकृतिक खेतीः भविष्य की दिशा

डॉ. बीरेन्द्र सिंह,
सहायक प्राध्यापक –सह–कनीय वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान),
बिहार कृषि विश्वविद्यालय – सिंचाई अनुसंधान केन्द्र,
बिक्रमगंज, रोहतास, बिहार, भारत।

Email Id: – beerendrasoil@gmail.com

परिचय

कृषि भारत की सभ्यता और संस्कृति से गहरा संबंध है। भारतीय किसान देश की अर्थव्यवस्था का आधार और खाद्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लेकिन आजकल कृषि पद्धतियों में हुए बदलावों ने खेती को मुश्किल बना दिया है। जब देश ने हरित क्रांति के बाद उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की, तब रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और सिंथेटिक पदार्थों का बहुत अधिक उपयोग हुआ। उत्पादन शुरू में बढ़ा, लेकिन बाद में उनका बुरा असर मिट्टी, जल, वायु, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर दिखाई देने लगा।

इसी परिस्थिति में दो विभिन्न खेती प्रणालियों का उदय हुआकृ प्राकृतिक खेती और जैविक खेती रासायनिक खेती से दूर होकर दोनों प्रणालियाँ निरंतर, पर्यावरण–मित्र और पोषण–सुरक्षित कृषि की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन दोनों का उद्देश्य एक ही हैः टिकाऊ उत्पादन और पर्यावरण की रक्षा। इसके बावजूद, इनके दृष्टिकोण और दृष्टिकोण में कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं।

जैविक खेती की अवधारणा और सिद्धांत

जैविक खेती एक कृषि प्रणाली है जिसमें फसलों का उत्पादन सिर्फ जैविक और प्राकृतिक स्रोतों से किया जाता है। इसमें कीटनाशकों, पौध वृद्धि नियामकों और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग वर्जित है। इसकी जगह वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद, गोबर की खाद, जैव कीटनाशक, जैव उर्वरक और सूक्ष्मजीवों से बने उत्पादों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को सुरक्षित खाद्य उत्पाद प्रदान करना है, मिट्टी की उर्वरता को स्थायी बनाए रखना और पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करना है। जैविक खेती में मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बनाए रखने के लिए फसल चक्र, मिश्रित फसल और बहुफसली प्रणाली जैसे प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

जैविक खेती के प्रमुख सिद्धांत हैंः

1. **स्वास्थ्य सिद्धांतः** मिट्टी, पौधे, पशु और मानव के स्वास्थ्य को एक इकाई के रूप में देखना।
2. **पारिस्थितिक संतुलनः** कृषि प्रणाली को प्राकृतिक पारिस्थितिकी से जोड़ना।
3. **न्याय सिद्धांतः** किसान, उपभोक्ता और पर्यावरण के बीच संतुलित संबंध बनाए रखना।
4. **देखभाल सिद्धांतः** कृषि में नवाचार करते समय पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों की सुरक्षा का ध्यान रखना।

प्राकृतिक खेती की अवधारणा और दर्शन

प्राकृतिक खेती प्रकृति के साथ मिलकर खेती करना है। यह प्रणाली पूरी तरह से स्थानीय संसाधनों से खेती करती है और बाहरी इनपुट पर निर्भरता समाप्त करती है। भारत में प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक सुभाष पालेकर ने ''शून्य लागत प्राकृतिक खेती'' की शुरुआत की।

इस प्रणाली का मूल विचार यह है कि मिट्टी, पौधे और जीवाणु एक जीवित तंत्र का हिस्सा हैं, जिन्हें प्राकृतिक प्रक्रियाओं से पोषण मिलना चाहिए, न कि बाहरी रासायनिक पदार्थों से। प्राकृतिक खेती में न तो रासायनिक खादों का उपयोग होता है, न ही तैयार जैविक खादों को खरीदा जाता है। किसान सिर्फ अपने खेत की मिट्टी, गोबर, गौमूत्र, गुड़, बेसन और जल से आवश्यक मिश्रण बनाता है।

प्राकृतिक खेती के चार स्तंभ माने गए हैं:

1. **जीवामृत**: गोबर, गौमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी से बना घोल जो मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ाता है।
2. **बीजामृत**: बीजों को रोग और फफूंद से बचाने हेतु स्थानीय जैव घोल का प्रयोग।
3. **आच्छादन**: मिट्टी को पौधों के अवशेषों या सूखी घास से ढकना ताकि नमी बनी रहे।
4. **वफसा**: मिट्टी में हवा और जल का उचित संतुलन बनाए रखना।

इस विधि का मूल मंत्र है – ''प्रकृति के साथ खेती करो, उसके विरुद्ध नहीं।''

जैविक और प्राकृतिक खेती में मुख्य अंतर

दृष्टिकोणों में अंतर है, हालांकि दोनों ही खेती प्रणालियाँ पर्यावरण के अनुकूल हैं। प्राकृतिक खेती पूरी तरह से स्थानीय संसाधनों पर निर्भर करती है, लेकिन जैविक खेती में बाहरी जैविक इनपुट जैसे वर्मी कम्पोस्ट या खरीदी गई हरी खाद का उपयोग किया जा सकता है।

आधार	जैविक खेती	प्राकृतिक खेती
इनपुट स्रोत	जैव उर्वरक, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद	जीवामृत, गोबर, गौमूत्र, स्थानीय संसाधन
बाहरी निर्भरता	आंशिक रूप से बनी रहती है	लगभग शून्य
लागत	मध्यम से अधिक	अत्यंत कम
प्रमाणीकरण	आवश्यक (ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन)	आवश्यक नहीं
उत्पादन प्रारंभिक वर्षों में	मध्यम से अधिक	शुरुआती वर्षों में कम
प्रकृति से सामंजस्य	सीमित	पूर्ण
बाजार उन्मुखता	निर्यात और शहरी बाजार	स्थानीय उपयोग और आत्मनिर्भरता

जैविक खेती के लाभ

जैविक खेती का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह खेती को पर्यावरणीय रूप से अनुकूल बनाता है। इससे मिट्टी की जैविक क्रियाशीलता बढ़ती है और खेत की उत्पादकता लंबे समय तक बनी रहती है।

मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार किया गया: जैविक खाद मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाता है, जिससे छिद्रता, सूक्ष्मजीवों की सक्रियता और जल धारण क्षमता बढ़ जाती है।

पर्यावरण की सुरक्षा: रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों की कमी से जलाशय प्रदूषण, वायु प्रदूषण और मिट्टी की क्षारीयता कम होती है।

सुरक्षित मानव स्वास्थ्य: जैविक उत्पादों में रासायनिक अवशेष नहीं होते, इसलिए उपभोक्ताओं को स्वच्छ और पौष्टिक भोजन मिलता है।

पारिस्थितिक संतुलन कायम करना: जैविक खेती से जैव विविधता बढ़ती है, जिससे रोगों और कीटों का प्राकृतिक नियंत्रण संभव होता है।

बाजार और निर्यात संभावनाएँ: जैविक उत्पादों की मांग अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेजी से बढ़ रही है, जिससे किसानों को उच्च मूल्य मिल सकता है।

प्राकृतिक खेती के लाभ

प्राकृतिक खेती का सबसे बड़ा लाभ है अधिक स्वतंत्रता और कम खर्च। किसान को जोखिम कम होता है क्योंकि वे बाहरी इनपुट पर निर्भर नहीं रहते।

शून्य खर्च प्रणाली: यह स्थानीय संसाधनों पर आधारित है, इसलिए किसान को कीटनाशक या उर्वरक खरीदने की जरूरत नहीं है।

मिट्टी की जीवनशक्ति को बचाना: जीवामृत और बीजामृत का उपयोग मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करता है, जो मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है।

जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन: आच्छादन और वफसा तकनीक से मिट्टी में नमी बनी रहती है, जिससे सूखा सहनशीलता बढ़ती है।

रोग और कीट नियंत्रण: रासायनिक दवाओं की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि प्राकृतिक संतुलन से कीटों की संख्या नियंत्रित रहती है।

किसानों का सम्मान और आत्मनिर्भरता: इस प्रक्रिया में किसान अपने संसाधनों से ही खेती करता है, जिससे उसका आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ता है।

दोनों प्रणालियों की चुनौतियाँ और सीमाएँ

जैविक कृषि में चुनौतियाँ:

- पहले कुछ वर्षों में उत्पादन कम हो सकता है।
- प्रमाणन की प्रक्रिया महंगी और कठिन है।
- बाजार मूल्य अस्थिर रहता है।
- जैविक इनपुट की उपलब्धता और गुणवत्ता अभी भी एक समस्या है।

प्राकृतिक खेती में चुनौतियाँ:

- बड़े पैमाने पर अपनाना कठिन है, खासकर व्यावसायिक फसलों में
- पहले वर्षों में उत्पादन और बाजार से जुड़ाव में कमी
- प्रमाणिक डेटा और वैज्ञानिक शोध की सीमित उपलब्धता
- किसानों को तकनीकी ज्ञान का अभाव

सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ

भारत सरकार ने जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलें की हैं।

परंपरागत कृषि विकास योजना: यह योजना समूह आधारित जैविक खेती को बढ़ावा देती है, जिसमें किसानों को प्रशिक्षण, जैविक इनपुट और प्रमाणन की सुविधा मिलती है।

राष्ट्रीय कृषि विकास कार्यक्रम : इससे जैविक इनपुट, विपणन और शोध को बढ़ावा मिलता है।

मिशन ऑर्गेनिक घाटी विकासः केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई योजना, खासकर पूर्वोत्तर राज्यों में जैविक खेती का प्रसार।

भारत में स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ

भारत आज जैविक उत्पादन में विश्व में सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक है। 2024 तक भारत में लगभग 45 लाख हेक्टेयर जैविक खेती की जाएगी। उत्तराखंड, सिक्किम और मिजोरम पूरी तरह से जैविक राज्य हैं। सिक्किम विश्व का पहला पूर्णतः प्राकृतिक राज्य था।

भारत भी प्राकृतिक खेती में अग्रणी बन रहा है। आंध्र प्रदेश में लगभग 60 लाख किसान शून्य लागत प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती के परिणामों का वैज्ञानिक मूल्यांकन ICAR, IIFSR, और NABARD द्वारा किया जा रहा है।

भविष्य की दिशाः समन्वित और सतत कृषि प्रणाली की ओर

आने वाले समय में कृषि का लक्ष्य केवल अधिक उत्पादन नहीं होगा, बल्कि "सतत उत्पादन" और "पोषण सुरक्षा" प्राथमिक उद्देश्य बनेंगे। जैविक और प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों का सम्मिलित रूप ही भविष्य की दिशा तय करेगा।

एकीकृत खेती प्रणालीः जहाँ फसल, पशुपालन, मत्स्य पालन, वृक्षारोपण और खाद उत्पादन एक साथ होते हैं

डिजिटल और चतमबपेम तिउपदह का उपयोगः जैविक और प्राकृतिक प्रणालियों को ड्रोन, सेंसर और AI से अधिक कुशल बनाया जा सकता है।

प्रशिक्षणः किसानों को कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों से नियमित प्रशिक्षण मिलना चाहिए।

प्रमाणीकरण करने में आसानीः छोटे किसानों के लिए स्थानीय प्रमाणन, जैसे भागीदारीपूर्ण गारंटी प्रणाली, मजबूत होना चाहिए।

मार्केट और मूल्य समर्थनः सरकार को किसानों को उचित मूल्य देने के लिए जैविक और प्राकृतिक उत्पादों के लिए अलग–अलग मूल्य श्रृंखला और विपणन तंत्र बनाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्राकृतिक और जैविक खेती एक जीवनदर्शन हैं जो हमें प्रकृति से फिर से जोड़ता है, न सिर्फ एक कृषि प्रणाली। प्राकृतिक खेती स्थानीय संसाधनों पर आधारित आत्मनिर्भर मॉडल प्रदान करती है, जबकि जैविक खेती एक संगठित और विश्वव्यापी व्यापारिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। दोनों ही प्रणालियाँ मिट्टी की उर्वरता, पर्यावरणीय संतुलन और मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद हैं।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए दोनों विधियों का संतुलित समन्वय ही सबसे अच्छा रास्ता हो सकता है। यदि किसान, नीति निर्माता और वैज्ञानिक इन प्रणालियों को अपनाते हैं, तो भारत आने वाले दशक में खाद्य सुरक्षा, "पोषण सुरक्षा" और "पर्यावरणीय संतुलन" का विश्वव्यापी उदाहरण बन सकता है।

भविष्य में खेती ही मिट्टी को जीवित रखेगी, किसानों को आत्मनिर्भर बनाएगी और लोगों को सुरक्षित भोजन देगी। यही प्राकृतिक और जैविक खेती की सच्ची दिशा है, जो भारत की निरंतर कृषि का भविष्य है।